पुस्तक - वितान

पाठ - सिल्वर वेडिंग

लेखक: मनोहर श्याम जोशी

यशोधर बाबू का ऑफिस:- वाई. डी. पंत (यशोधर) सेक्शन ऑफिसर हैं। यशोधर बाबू पाँच बज कर पच्चीस मिनट पर अपनी आखिरी फाइल आउट ट्रे में डालते हैं। उनके साथी पाँच बजे के बाद भी ऑफिस में बैठे हैं, क्योंकि उनके यशोधर बाबू ऑफिस में हैं। किशन दा से मिली परंपरा का पालन करते हुए यशोधर बाबू ऑफिस से चलते हुए अपने नीचे काम करने वालों से कोई मनोरंजक बात करते हैं। ऑफिस के असिस्टेंट ग्रेड का चड्ढा यशोधर बाबू से बदतमीजी करता है। चड्ढा यशोधर बाबू को "समहाउ इंप्रॉपर" लगता है।

यशोधर से ऑफिस के कर्मचारियों का आग्रह:- बातों-बातों में यशोधर के साथ काम करने वाले साथियों को पता चलता है कि आज यशोधर बाबू की सिल्वर वैडिंग है। यशोधर बाबू के साथी उनसे पार्टी माँगते हैं। चड्ढा यशोधर बाबू से तीस रुपये माँगता है। यशोधर बाबू पार्टी के लिए पैसे तो दे देते हैं, पर पार्टी के लिए रुकते नहीं। ऐसा उन्होंने किशनदा से ही सीखा था।

यशोधर बाबू का ऑफिस के बाद का जीवन:- यशोधर बाबू ऑफिस से निकल कर बिरला मंदिर जाते, उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनते या प्रभु का ध्यान लगाते। बिरला मंदिर से यशोधर बाबू पहाड़गंज जाते, वहाँ से घर के लिए साग-सब्जी खरीदते। लगभग आठ बजे घर पहुँचते। यशोधर बाबू का छोटी-बड़ी बातों पर पत्नी और बच्चों से मतभेद होने लगा है, इसीलिए यशोधर बाबू घर जल्दी लौटना पसंद नहीं करते।

यशोधर बाबू का परिवार:- यशोधर बाबू के तीन पुत्र व एक पुत्री हैं। बड़ा पुत्र एक विज्ञापन कंपनी में है। उनके पुत्र का वेतन डेढ़ हजार रुपया है। यशोधर बाबू का इतना वेतन रिटायरमेंट के पास होने पर है। यशोधर बाबू का दूसरा पुत्र आई.ए.एस. देने की तैयारी कर रहा है। यद्यपि उनके पुत्र का "एलाइड सर्विसेज" में पिछले साल सिलेक्शन हो गया था। क्योंकि उनका नाम सूची में काफी नीचे था, उसने ज्वाइन करने से इनकार कर दिया। यशोधर का तीसरा पुत्र स्कॉलरशिप लेकर अमरीका चला गया है।यशोधर बाबू की एकमात्र

पुत्री डॉक्टर है तथा डॉक्टरी की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अमरीका जाना चाहती है। उसने शादी केसभी प्रस्ताव ठुकरा दिए हैं। यशोधर बाबू की पत्नी मूल रूप से आधुनिक नहीं है। बच्चों की तरफ़दारी करने की मातृ-सुलभ मजबूरी ने उसेमॉडबना दिया। यशोधर बाबू अकसरअपनी पत्नी का मजाक बनाते।

किशनदाऔरयशोधरबाबू:- किशन दा का बुढ़ापा अच्छा नहीं रहा। किशन दा के सभी साथियों ने अपने मकान बना लिए थे, परंतु किशन दाने मकान नहीं बनाया। जब किशन दा रिटायर हुए, उन्हें किसी ने अपने यहाँ रखने की पेशकश नहीं दी। यशोधर बाबू भी उनके सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं रख सके, क्योंकि उनके दो कमरों के घर में तीन परिवार रहते थे। किशनदा छः महीने राजेंद्र नगर में किराए के मकान में रहे और फिर गाँव चले गए।गाँव में एक साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। उनके गाँव-भाई से जब किशन दा की मृत्यु का कारण पूछा गया, तो जवाब मिला– "जो हुआ होगा" यानी "पता नहीं, क्या हुआ।"

यशोधर बाबू को लगता है जिन लोगों के बाल-बच्चे नहीं होते, घर परिवार नहीं होता, उनकी मृत्यु "जो हुआ होगा" से हो जाती है। यशोधर बाबू के अपने बच्चों से अच्छे संबंध नहीं, उनका क्या होगा? फिर यशोधर बाबू को किशनदा की बात याद आती है। किशन दा कहते थे - जब तक बच्चों पर जिम्मेदारी नहीं आती, तब तक ही बच्चा बेवकूफी करता है। उसके बाद सब ठीक हो जाता है।

यशोधर बाबू ने अभी तक अपना मकान नहीं बनाया है, क्योंकि यशोधर बाबू को किशन दा की उक्ति ठीक लगती है - मूरख लोग बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। यशोधर बाबू की सोच ये भी है कि रिटायर होकर वो गाँव के पुश्तैनी मकान में रहेंगे। यशोधर बाबू का यह भी सोचना है किउनके रिटायर होने से पहले उनका कोई लड़का सरकारी नौकरी में आ जाएगा और सरकारी क्वार्टर उनके परिवार के पास रहेगा।

यशोधर बाबू मैट्रिक पास करते ही किशन दा के पास दिल्ली आ गए थे। किशन दा जो कहते, यशोधर बाबू उसे अटल वचन मानते थे। जब तक किशन दा दिल्ली में रहे, यशोधर बाबू हर दूसरे दिन उनसे मिलते रहे। किशन दा के पट्ट शिष्य थे यशोधर बाबू। किशन दा के जाने के बाद यशोधर बाबूने उनकी परंपरा को जीवित रखा। वोघर में होली गवाते,

'जन्योपुन्यू' के दिन सब कुमाउँनियों को अपने घर बुलाते। रामलीला की तालीम के लिए अपने क्वार्टर का कमरा देते।

यशोधर बाबू और उनके बच्चे:- यशोधर बाबू चाहते हैं कि उनके बच्चे घर के काम संभालें, दूध लायें, राशन लायें, डिस्पेंसरी से दवा लायें आदि। बच्चे तो काम करते नहीं, वो यशोधर बाबू से कहते हैं- बब्बा, इन कामों के लिए नौकर क्यों नहीं रख लेते? यशोधर बाबू का विज्ञापन कंपनी में काम करने वाला बेटा अपना वेतन यशोधर बाबू को नहीं देता। यशोधर बाबू का पुत्र घर का सामान लाता है जैसे कारपेट, पर्दे, फ्रिज, टी.वी. आदि और उस सामान को अपना कहता है। यशोधर बाबू सोचते हैं अगर बेटा नौकर को वेतन देगा तो नौकर उसका ही होगा।

यशोधर के घर में पार्टी:- यशोधर बाबू जब अपने क्वार्टर पर पहुँचे, तो घर में सजावट हो रही थी, घर से मेहमान विदा ले रहे थे। विदा देने वाले यशोधर का बेटा भूषण, उनकी बेटी और पत्नी थे। जब मेहमान चले गए, यशोधर बाबू ने घर में क़दम रखा। घर में पार्टी अभी भी चल रही थी। पार्टी में उनके पुत्र और पुत्री के मित्र और रिश्तेदार थे। सिल्वर वैडिंग की पार्टी थी। यशोधर बाबू को ये समहाउइं प्रॉपर लगा, पर अच्छा भी लगा। यशोधर बाबू की शादी बगैर किसी धूमधाम के हुई थी। सिल्वर वैडिंग पार्टी धूमधाम से युक्त थी। यशोधर के बच्चों ने उन्हें मेहमानों से मिलवाया और उनकी पत्नी ने केक काटा। यशोधर बाबू ने केक नहीं खाया और संध्या करने चले गए।

यशोधर बाबू की किशन दा से मुलाकात:- शाम की संध्या करते हुए उन्हें किशन दा दिखाई दिए। यशोधर बाबू ने किशनदा से पूछा - 'जो हुआ होगा' से आप की मृत्यु कैसे हो गई? किशन दा ने कहा – गृहस्थ, अमीर, गरीब, ब्रहमचारी सब 'जो हुआ होगा' से ही मरते हैं। आखिर में सब अकेले ही होते हैं।

यशोधर बाबू के उपहार:- जब यशोधर बाबू ने संध्या में काफी देर लगा दी, तो उनकी पत्नी उनको बुलाने आई। जब यशोधर बाबू को पता चला किसब चले गए हैं, तो वो गमछा पहन कर आ गए। मेज पर लगे उपहारों को देखकर यशोधर बाबू ने पूछा - ये किसके लिए हैं? भूषण ने बोला- आपके लिए हैं। भूषण ने एक पैकेट खोलकर ड्रेसिंग गाउन निकाला और कहा– बब्बा, इसे पहनकर दूध लेने जाना, फटा पुलोवर पहनकर नहीं। बेटी उनके लिए पाजामा-कुर्ता

लाई थी। यशोधर बाबू ड्रेसिंग गाउन पहनते हैं, तो उन्हें किशन दा याद आए, जिनकी मौत 'जो हुआ होगा' से हुई थी।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1)यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर :यशोधर बाबू की पत्नी मूल रूप से आधुनिक विचारों की नहीं थी। परंतु बच्चों की तरफदारी और बच्चों के प्रति माँ के प्रेम ने उसे आधुनिक बना दिया है। यशोधर की पत्नी जब शादी के बाद यशोधर बाबू के घर आई, उस समय उनका संयुक्त परिवार था। घर में यशोधर बाबू के ताऊजी और ताई की चलती थी। यशोधर की पत्नी को वही व्यवहार करना पड़ता, जो उनकी ताई चाहती। यशोधर को लगता वो युवा नहीं, वृद्ध है। युवा अवस्था की अतृप्त इच्छाओं को यशोधर की पत्नी अब पूरा करना चाहती थी। यशोधर की पत्नी ने यशोधर बाबू से कह दिया था कि वो अब बाबा आदम के जमाने के नियम नहीं मानेगी। यशोधर की पत्नी होठों पर लाली लगाती है, बिना बाँह का ब्लाउज पहनती है, सिल्वर वैडिंग की पार्टी में बढ़-चढ़कर भाग लेती है।

यशोधर बाबू समय के साथ नहीं ढल सके। यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशन दा का बहुत अधिक प्रभाव है। यशोधर बाबू किशन दा के दिए संस्कारों को बदलना नहीं चाहते। उन्हें सिल्वर वैडिंग की पार्टी अच्छी तो लगती है, पर उनके संस्कार उन्हें केक खाने से रोकते हैं। घर के टी.वी., फ्रिज, गैस आदि, उन्हें लगता है, ये सब चीजें उनकी हैसियत को बढ़ाने वाले हैं, पर फिर भी उन्हें ये सब समहाउ इंप्रॉपर लगते हैं। यशोधर बाबू एक ओर किशन दा के दिए संस्कारों से प्रभावित हैं, इसीलिए वो बदलते नहीं हैं।

प्रश्न दो) पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते हैं?

उत्तर:'जो हुआ होगा' वाक्य पाठ में अनेक स्थानों पर आया है। सबसे पहले यह वाक्य किशन दा का जाति भाई कहता है। जब उससे पूछा जाता है कि किशन दा की मृत्यु कैसे हुई, तो वो कहता है- 'जो हुआ होगा 'अर्थात् पता नहीं, उनकी मृत्यु कैसे हुई। यशोधर बाबू को लगता है जिस व्यक्ति की शादी नहीं होती, बाल-बच्चे नहीं होते, उनकी मौत 'जो हुआ होगा' से ही होती है।

दूसरी बार जब यशोधर बाबू पूजा कर रहे हैं तो उन्हें किशन दा दिखते हैं। यशोधर बाबू उनसे पूछते हैं - आपकी मृत्यु 'जो हुआ होगा' से कैसे हुई? तब किशन दा कहते हैं - सभी लोग इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं, चाहे वो गृहस्थ हो, ब्रह्मचारी हो, अमीर हो या गरीब हो। सब लोग शुरू में और आखिर में अकेले ही होते हैं। संसार में अपना कोई नहीं होता, केवल अपने नियम अपने होते हैं।

पाठ के अंत में यशोधर के बच्चे जब उन्हें सिल्वर वैडिंग पार्टी के बाद उपहार देते हैं और उनका पुत्र कहता है – बब्बा! आप यह गाउन पहनकर दूध लेने जाना, तब यशोधर बाबू सोचते हैं कि जब अपने बच्चे जीते-जी उपेक्षा करने लगें तो उनकी मृत्यु 'जो हुआ होगा' से ही होती है।

प्रश्न 3)'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर : 'समहाउ इंप्रॉपर' यशोधर बाबू का तकिया कलाम है, क्योंकि यशोधर बाबू ने इस वाक्यांश को अनेक बार दोहराया है। यशोधर बाबू एक सिद्धांतवादी व्यक्ति हैं। जो बात उनके सिद्धांतों के विरुद्ध होती है या जो बात भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं होती, उनके मुख से निकलता है 'समहाउ इंप्रॉपर'। जैसे- अपने साधारण बेटे का असाधारण वेतन उन्हें 'समहाउ इंप्रॉपर' पर लगता है, वृद्धा पत्नी का आधुनिक स्वरूप उन्हें 'समहाउ इंप्रॉपर' लगता है। पाठ में इस वाक्यांश का प्रयोग बारह बार से अधिक प्रयोग कियागया।

'समहाउ इंप्रॉपर' वाक्यांश का पाठ के कथ्य से गहरा संबंध है। लेखक स्पष्ट करते हैं किपुरानी पीढ़ी के लोग आधुनिक तौर-तरीके, बदलाव को स्वीकार नहीं करते। परिणाम स्वरूप अपने ही बच्चों व आधुनिक पीढ़ी के लोगों की उपेक्षा का शिकार हो जाते हैं। लेखक ये भी बताना चाहते हैं कि बदलती परिस्थितियों में यदि सम्मान के साथ रहना है, तो परिवर्तन स्वीकार करना जरूरी है। यशोधर बाबू की तरह 'समहाउ इंप्रॉपर' कहने से काम नहीं चलेगा।

प्रश्न 4) यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशन दा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे?

उत्तर : यशोधर बाबू के जीवन में किशन दा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यशोधर बाबू दिल्ली में आकर किशन दा के पासरहते हैं। किशन दा यशोधर बाबू के आदर्श हैं, इसीलिए किशन दा के व्यक्तित्व का प्रभाव यशोधर के व्यक्तित्व पर साफ नजर आता है, चाहे ऑफिस हो या घर।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को दिशा देने में अवश्य हीकिसी न किसी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। मेरे जीवन को दिशा देने वाली मेरी माता जी हैं। उन्होंने जीवन में संघर्ष किया। हमें पढ़ाने के लिए वे खुद पढ़ीं और उन्होंने नौकरी की, ताकि पिताजी को सहायता दे सकें। उनकी मेहनत का ही परिणाम है कि हम अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं।माँ की इच्छा है कि उनके बच्चे पढ़-लिख कर योग्य बनें। हम अपनी माँ की इच्छा जरूर पूरी करेंगे।

प्रश्न5) वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर : वर्तमान समय में संयुक्त परिवार प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। यशोधर बाबू के परिवार की बात करें, तो उन के परिवार में पति-पत्नी और बच्चे हैं। पति यशोधर बाबू घर में उपेक्षित हैं। पत्नी वही करती है, जैसा उसके बच्चे कहते हैं। बच्चे अपनी मनमर्जी करते हैं। पुत्र पिता को अपना वेतन नहीं देता तथा घर में अपने वेतन से लाए सामान को अपना कहता है। बेटी अपनी इच्छा से चलती है तथा मर्जी के कपड़े पहनती है, पिता को पसंद आए या नहीं। यशोधर बाबू सिल्वर वैडिंग पार्टीमें इच्छा न होने पर भी मेहमानों से मिलते हैं, केक काटते हैं। गैस, फ्रिज आदि यशोधर बाबू को पसंद नहीं, पर फिर भी उनका व्यवहार नरम है, अर्थात् यशोधर अपने परिवार के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करते हैं, परंतु उनके बच्चे और पत्नी ऐसा कुछ नहीं करते।

आज जो स्थिति यशोधर बाबू के परिवार की है, वैसी ही स्थिति देश के अधिकतर परिवारों की है। अगर हमपरिवार में खुशहाली चाहते हैं, तो परिवार के सभी सदस्यों में सामंजस्य होना चाहिए।

प्रश्न 6)निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे और क्यों?

(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य
(ख) पीढ़ी का अंतराल
(ग)
(घ) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

उत्तर: "सिल्वर वैडिंग" कहानी में मानवीय मूल्य जैसे रिश्तेदारी, बुजुर्गों का सम्मान, भाईचारे की भावना आदिहाशिए पर हैं। इसीलिए यशोधर बाबू के बच्चे व पत्नी रिश्तेदारी निभाना उचित नहीं समझते, बच्चे बुजुर्ग हो रहे यशोधर बाबू का सम्मान नहीं करते तथा मानवीय मूल्यों का विरोध करते हैं। इसीलिए सुख-दुख में गरीब रिश्तेदारों के घर जाना जरूरी नहीं मानते।

यशोधर बाबू के बच्चों व पत्नी पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। माँ बच्चों के कहने पर आधुनिक तौर-तरीके अपना लेती है। पार्टी करना, केक काटना भारतीय संस्कृति के अंग नहीं हैं, परंतु अपने मित्रों आदि में अपने आधुनिक होने की साख जमाने के लिए वो ये सब करते हैं।

कहानी में पीढ़ी का अंतराल भी स्पष्ट नजर आता है। किशन दा, यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतीक हैं। अपने कार्यालय में भी उन्हें पुरानी पीढ़ी का समझा जाता है। चड्ढा उनका मजाक बनाने से चूकता नहीं। यशोधर बाबू रिश्तेदारों, त्योहारों, संस्कृति, अपनत्व को महत्त्व देते हैं, जबकि उनके बच्चे आधुनिकता के दीवाने हैं। यशोधर बाबू को पुरानी परंपराएँ ठीक लगती हैं तथा आधुनिक परंपराएँ समहाउ इंप्रॉपर लगती हैं। यशोधर बाबू के बच्चों को यशोधर बाबू का प्रत्येक काम अनुचित लगता है, रिश्तेदारी निभाना बेकार की बात लगती है। बच्चों को अपने मान-अपमान की चिंता है। कुछ इसी कारण यशोधर की वैडिंग पर उनके बच्चे उन्हें गाउन उपहार में देते हैं, जिससे यशोधर बाबू अपना पुराना पुलोवर न पहनें। यद्यपि उपरोक्त तीनों ही कहानी की मूल संवेदना है, परंतु पीढ़ी का अंतराल अधिक उचित है।

प्रश्न 7)यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए कथनोंमेंसे आप जिस के समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए:-

क) यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं हैं।
ख) यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है, जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है, पर पुराना छोड़ता नहीं। इसीलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।
ग) यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों का अपनाना ही उचित है।

उत्तर : यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है, जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है।

हमारे अनुसार हमारे बड़ों के अंदर एक तरह का द्वंद्व है। उन्हें आधुनिक चीजों में वो चीजें आकर्षित करती हैं, जो आराम देने वाली हैं। साथ ही अपने समय की भी उन्हें याद आती है। जैसे संचार के साधन उन्हें अच्छे लगते हैं। इन साधनों के द्वारा संसार के कोने-कोने में घटने वाली घटना पल भर में संसार को ज्ञात हो जाती है। दुनिया सिमट गई है, ये बात उन्हें अच्छी लगती है।

यशोधर बाबू का द्वंद्व स्वाभाविक है। उन पर किशन दा के व्यक्तित्व का प्रभाव है। किशन दा के सिद्धांतों से उन्हें लगाव है। उनके बच्चे आधुनिक हैं, घर में सामान लाते हैं, उसे घर का सामान नहीं कहते, अपितु अपना सामान कहते हैं। इस सामान को देखकर यशोधर बाबू को गर्व होता है। उन्हें गर्व होता है सिल्वर वैडिंग की पार्टी पर। हम कह सकते हैं पुराने को यशोधर बाबू छोड़ नहीं सकते और नया उन्हें अच्छा लगता है, अपनी ओर खींचता है। ऐसे में यशोधर बाबू उपेक्षा के नहीं, सहानुभूति के पात्र हैं।

प्रश्न 8) यशोधर बाबू के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : सिल्वर वैडिंग कहानी के नायक यशोधर बाबू हैं। वो एक प्रकार के द्वंद्व के शिकार हैं। नया उन्हें अपनी ओर खींचता है और पुराना वह छोड़ना नहीं चाहते। इस कारण यशोधर बाबू के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है।

कहानी के आधार पर उनके चरित्र के बिंदु कुछ येहो सकते हैं:-

यशोधर बाबू के आदर्श पुरुष किशनदा- यशोधर बाबू के आदर्श पुरुष किशन दा हैं। किशन दासे यशोधर बाबू ने जो संस्कार प्राप्त किए हैं, वो जीवन भर उस पर चलते हैं तथा समय-समय पर यशोधर बाबू किशन दा से मार्ग दर्शन भी लेते हैं।

कर्त्तव्य का पालन करने वाले- यशोधर बाबू अपना कर्त्तव्य समझते हैं, इसीलिए वो अपने बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ाते हैं। वो बच्चों को सामाजिक संस्कारों से जोड़ना चाहते हैं, उन्हें मानवीय मूल्य देना चाहते हैं, जिसमें वो काफी हद तक सफल नहीं हैं।

बीच का रास्ता निकालने वाले- यशोधर बाबू बीच का रास्ता निकाल कर चलते हैं, इसीलिए जब दफ्तर में उनसे सिल्वर वैडिंग की पार्टी माँगी जाती है, तो वो पार्टी का पैसा तो दे देते हैं, पर पार्टी में शामिल नहीं होते। उसी प्रकार सिल्वर वैडिंग की घर में होने वाली पार्टी में वोकेक तो काटते हैं, पर केक खाने के लिए तैयार नहीं होते।

फूहड़ आधुनिकता के विरोधी-यशोधर बाबू को अपनी पत्नी व बेटी के आधुनिक कपड़े अच्छे नहीं लगते। घर में आये फ्रिज, टी.वी. आदि गैर जरूरी लगते हैं।

भारतीय संस्कृति व संस्कारों के पक्षधर- यशोधर बाबू धार्मिक संस्कारों और परंपराओं के पक्षधर हैं। वे रामलीला, होली गवना, जन्योपुन्यू की परंपराओं का पालन करते हैं। सादे जीवन में विश्वास करते हैं। अपने रिश्तेदारों के सुख-दुख में शामिल होना चाहते हैं।

प्रश्न 9) वाई. डी. पंत का आदर्श कौन था? उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालें?

उत्तर : वाई. डी. पंत (यशोधर बाबू) के आदर्श किशन दा थे। उनकी मृत्यु हो चुकी है, फिर भी यशोधर बाबू को लगता हैकि जीवन में जब भी किशन दा के मार्गदर्शन की जरूरत होती है, किशन दा यशोधर बाबू का मार्गदर्शन अवश्य करते हैं।

सहयोग करने वाले- किशन दा पहाड़ी हैं। दिल्ली में जो भी पहाड़ी आता है, किशन दा के द्वार उसके लिए खुले हैं। मैट्रिक पास करके यशोधर बाबू जब दिल्ली आते हैं,वो उन्हें अपने घर रखते हैं, घर भेजने के लिए अपनी जेब से यशोधर को पैसा देते हैं और यशोधर बाबू की सरकारी नौकरी भी लगवाते हैं।

अनुभवी-किशन दाअनुभवी व्यक्ति हैं। उनके अनुभवों का लाभ उनके सहयोगी यशोधर बाबू अक्सर उठाते रहते हैं।

यशोधर बाबू के व्यक्तित्व निर्माता- यशोधर बाबू मानते हैं किउनके व्यक्तित्व का निर्माण किशनदाने किया है, इसीलिए यशोधर बाबू के प्रत्येक कार्य में किशन दा की प्रतिछाप नजर आती है।

यशोधर बाबू को निस्वार्थस्नेह करने वाले- किशन दायशोधर बाबू को स्नेह करते हैं, इसीलिए सेवानिवृत्त होने के बाद, जब तक वे दिल्ली में रहे, किशन दा यशोधर बाबू से मिलते रहे। किशन दा स्नेह से यशोधर बाबू को भाऊ कहते थे।

मार्गदर्शक- किशनदाको यशोधर बाबू अपना मार्गदर्शक मानते हैं। किशन दा- ऑफिस में कैसे काम करना चाहिए, - अपने नीचे कार्य करने वालों से कैसा व्यवहार करना चाहिए आदि, इसका तो मार्गदर्शन करते ही हैं, साथ ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यशोधर बाबू का मार्गदर्शन करते हैं। किशन दा मृत्यु के बाद भी एक तरह से यशोधर बाबू का मार्गदर्शन कर रहे हैं। यशोधर बाबू किशन दा के द्वारा दिखाए मार्ग पर ही चल रहे हैं।

प्रश्न 10) यशोधर पंत पर किशन दा के प्रभाव की समीक्षा कीजिए।

उत्तर : यशोधर पंत पर किशन दा का अत्यधिक प्रभाव है, क्योंकि यशोधर बाबू किशन दा के मानस पुत्र हैं। यशोधर बाबू के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर किशन दा का प्रभाव है। यशोधर बाबू का मुस्कुराना, प्रशंसा पर झेंपना, ऑफिस से लौटते समय साथियों के साथ हँसी-मजाक करना, मकान नखरीदना, रिटायरमेंट के बाद गाँव में जाकर बसना, सब पर किशन दा का प्रभाव है। किशन दा के बाद यशोधर बाबू अपने घर जन्योपुन्यू के लिए पहाड़ियों को बुलाते हैं, होली गवाते हैं। किशन दा जब तक दिल्ली में रहे, तब तक यशोधर बाबू उनके शिष्य रहे। किशन दा की मृत्यु के बाद यशोधर बाबू उनकी परंपराओं को जीवित रखते हैं। किशन दा की मृत्यु के बाद यशोधर बाबू मन-ही-मन किशन दा से बातें करते हैं।

प्रश्न 11)सेक्शन ऑफिसर वाई.डी. पंतऔर उनके सहयोगी कर्मचारियों के परस्पर संबंधों पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर : सेक्शन ऑफिसर वाई. डी. पंत अपने अधीन काम करने वालों को अपने अनुसार चलाना चाहते हैं।वो खुद साढ़ेपाँच बजे तक ऑफिस में बैठते हैं, इसलिए मजबूरी में अन्य कर्मचारी भी बैठे रहते हैं। ऑफिस में शाम को घर चलने से पहले वे अपने साथियों से हँसी-मजाक कर के पूरे दिन के तनाव को कम करने की कोशिश करते हैं।वो अपने नीचे काम करने वालों से दूरी बनाकर रखते हैं, उनके साथ घुलते-मिलते नहीं हैं। सिल्वर वैडिंग की पार्टी के लिए यशोधर बाबू पैसे तो दे देते हैं, परंतु उस पार्टी में खुद शामिल नहीं होते। यशोधर बाबू के अधीनस्थ असिस्टेंट ग्रेड का चड्ढा उनके साथ धृष्टता करता है, मगर यशोधर बाबू उसे अनदेखा कर देते हैं।

प्रश्न 12) यशोधर बाबू अपने रोल मॉडल किशनदासे क्यों प्रभावित हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यशोधर बाबू के अपने रोल मॉडल किशन दा से प्रभावित होने के अनेक कारण हैं। यशोधर बाबू मैट्रिक पास करके दिल्ली आये। किशन दाने यशोधर को अपने घर रखा, क्योंकि यशोधर की उम्र कम थी। किशन दाने यशोधर को अपने घर में चलने वाली मैस में रख लिया। केवल इतना ही नहीं, यशोधर को पचास रुपये घर भेजने के लिए उधार भी दिए। नौकरी के लायक उम्र होने पर सरकारी नौकरी लगवाई। यशोधर बाबू को नौकरी के दौरान किशन दाने मार्गदर्शन भी दिया। यशोधर को संस्कार, लोगों से व्यवहार करना किशन दा ने ही सिखाया। किशन दा यशोधर बाबू को भाऊ कहकर बुलाते थे।

प्रश्न13)क्या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को "सिल्वर वैडिंग" कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है?

उत्तर : हाँ, "सिल्वर वैडिंग" कहानी की मूल संवेदना पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को मान सकते हैं। यशोधर बाबू के बच्चे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हैं। उनकी पुत्री और पत्नी आधुनिक कपड़े पहनते हैं तथा पुत्री का मानना है कि वो अपनी पसंद के वर से ही विवाह करेगी। यशोधर बाबू का एक पुत्र अमरीका में पढ़ता है, दूसरा सिविल सर्विस की तैयारी कर रहा है तथा बड़ा पुत्र नौकरी करता है। वह अपने पिता को अपना वेतन नहीं देता तथा घर में जो सामान लाता है, उसे अपना कहता है। बच्चे अपने माता-पिता की सिल्वर वैडिंग की पार्टी रखते हैं, केक काटते हैं और यशोधर बाबू को उपहार मेंगाउनदेते हैं।अर्थात् पाश्चात्य संस्कृति को अपना चुके हैं यशोधर बाबू के बच्चे, इसीलिए उन्हें अपने पिता दकियानूसी लगते हैं।

प्रश्न 14) क्या "पीढ़ी का अंतराल" कहानी की मूल संवेदना है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : कहानी में पीढ़ियों का अंतराल स्पष्ट रूप से नजर आता है। एक ओर यशोधर बाबू हैं पुरानी पीढ़ी के समर्थक। किशन दाउनके आदर्श हैं। यशोधर बाबू सादगी पसंद हैं। रिश्तेदारी निभाना, सामाजिक परंपराओं को निभाना उन्हें अच्छा लगता है।

दूसरी तरफ उनके बच्चे हैं, जो स्वयं उन्नति करना चाहते हैं। पार्टी करना, आधुनिक ढंग के कपड़े पहनना उन्हें पसंद है। उन रिश्तेदारों से वोसंबंध नहीं रखना चाहते, जो गरीब हैं। नई पीढ़ी के ये लोग पुरानी पीढ़ी को अपने अनुसार ढालना चाहते हैं। अर्थात् हम कह सकते हैं कि पीढ़ी का अंतराल कहानी में स्पष्ट नजर आता है।

प्रश्न 15) "सिल्वर वैडिंग" वर्तमान युग में बदलते जीवन मूल्यों की कहानी है। सोदाहरण सिद्ध कीजिए। अथवा "सिल्वर वैडिंग" कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश देने का प्रयास किया है?

उत्तर : "सिल्वर वैडिंग" कहानी बदलते जीवन मूल्यों की कहानी है। आज की नई पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति को अपना रही है, इसलिए उनके लिए परंपराएँ बेमानी हैं, माता-पिता का वो सम्मान नहीं करते, उन रिश्तेदारों की वो परवाह नहीं करते जो उनको कोई लाभ नहीं पहुँचाते, आधुनिक वेशभूषा धारण करते हैं अर्थात् समय और समाज तेजी से बदल रहा है।

पुरानी और नई पीढ़ी का अंतराल स्पष्ट नजर आ रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे पुरानी पीढ़ी को हाशिए पर धकेल दिया गया है। यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतीक हैं और उनके बच्चे नई पीढ़ी के प्रतिनिधि।

लेखक कहानी के माध्यम से यहसंदेश देना चाहते हैं किनई पीढ़ी का समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलना आवश्यक है, परंतु उन्हें अपनी परंपराओं को छोड़ना नहीं चाहिए। रिश्तेदारों, पूर्वजों और परिवार के सदस्यों का उन्हें सम्मान करना चाहिए। ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं।

प्रश्न 16) "सिल्वर वैडिंग" कहानी के आधार पर उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो आज बदल रहे हैं। क्या आप इस बदलाव को ठीक समझते हैं? सकारण उत्तर दीजिए।

उत्तर : "सिल्वर वैडिंग" कहानी में बदलते जीवन-मूल्यों का उल्लेख है। यशोधर बाबू पुराने जीवन-मूल्यों के प्रतीक हैं। वो आज भी किशन दा द्वारा दिए गए संस्कारों का पालन करते हैं। वो अपने रिश्तेदारों के सुख-दुख में शामिल होना चाहते हैं। आज भी वो अपने कुटुंब के लोगों के साथ मिलकर रहना चाहते हैं।

यशोधर बाबू के बच्चे उन जीवन-मूल्यों को नहीं मानते, जिन्हें यशोधर बाबू मानते हैं और उनका साथ उनकी माँ दे रही है। ये लोग एकल परिवार में विश्वास करते हैं। रिश्तेदारी केवल उनके साथ निभाते हैं, जो उच्च स्तर के हैं। उनके बच्चे पार्टी आदि में विश्वास करते हैं, जीवन में उन्नति करने के लिए बॉस को प्रसन्न करने में विश्वास करते हैं।

समय और परिस्थिति के साथ संस्कृतियों और संस्कारों में बदलाव आता है, परंतु जो बदलाव हमें हमारे संस्कारों से दूर करे, अपनों से दूर करे, हमें स्वार्थी बनाए, ऐसा बदलाव ठीक नहीं है। इस पर रोक लगनी ही चाहिए।

प्रश्न 17) "सिल्वर वैडिंग" कहानी का प्रमुख पात्र वर्तमान में रहता है, किंतु अतीत को आदर्श मानता है। इससे उनके व्यवहार में क्या-क्या विरोधाभास दिखाई पड़ते हैं?

अथवा

कहानी के आधार पर यशोधर बाबू के मानसिक द्वंद्व का उल्लेख कीजिए।

अथवा

यशोधर पंत की पीढ़ी की विवशता यह है कि वे पुराने को अच्छा समझते हैं और वर्तमान के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

पुराने होते जा रहे जीवन-मूल्यों और नए प्रचलनों के बीच यशोधर पंत के संघर्ष पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : कहानी के प्रमुख पात्र यशोधर बाबू हैं, जो एक प्रकार के मानसिक द्वंद्व के शिकार हैं।वो पुराने संस्कारों, पुराने विचारों के पक्षधर हैंतथा उनकी आस्था भी पुरानी है,जबकि नई पीढ़ी के लोग इसे दकियानूसी समझते हैं। यशोधर बाबू आज भी किशन दा के संस्कारों से जुड़े हैं।वो चाहते हैं घर में परंपराओं से जुड़े काम हो, उनके जानने वाले उनके घर आयें, घर में जन्योपुन्यू मनाया जाये, होली गवाई जाये। उनके बच्चे ये सब पसंद नहीं करते। वो तो आधुनिक पाश्चात्य रंग-ढंग में विश्वास करते हैं।यशोधर बाबू को नया अपनी ओर खींचता है, पर वे पुराने को छोड़ना नहीं चाहते। इसीलिए यशोधर बाबू एक संघर्ष में जी रहे हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 18) "यशोधर बाबू दो विभिन्न कालखंडों में जी रहे हैं।" कैसे?

उत्तर : यशोधर बाबू दो विभिन्न खंडों में जी रहे हैं। वो वर्तमान को भूलकर भूतकाल में जी रहे हैं। समय के साथ यशोधर बाबू बदलना नहीं चाहते। उनकी पत्नी ने अपने आप को बदल लिया है। उन्होंने पार्टी कल्चर को अपना लिया है। उन्होंने खान-पान की आदतों को बदल लिया है।वो सिल्वर वैडिंग की पार्टी में बढ़-चढ़कर शामिल होती हैं, केक खाती हैं, जबकि यशोधर बाबू रामलीला और होली गवाने की परंपराओं से जुड़े हैं। नयाउन्हें अपनी ओर खींचता है।उन्हें अपने घर में आए बदलाव परगर्व भी होता है, परंतु फिर वोभूतकाल में लौट जाते हैं। निश्चित रूप से यशोधरबाबूदोकालखंडों में जी रहे हैं।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM